।। अर्हम् ।।


# आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़

**दूरभाश : 01565–224600, 224900**

**ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com**


## 250 वां अभिनिश्क्रमण दिवस
## हर संगठन में जरूरी है साधना – आचार्य महाप्रज्ञ

**–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–**

श्रीडूँगरगढ़ 24 मार्च : वि ववभूति आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य भिक्षु के 250 वें अभिनिश्क्रमण दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित सार्द्ध द्वि ाताब्दी समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि प्रत्येक संगठन को तैजस्वी बनाने के लिए साधना जरूरी है। आज हमारे लिए आत्मनिरीक्षण दिन हैं। जो साधना आचार्य भिक्षु ने 249 वर्श पूर्व की थी। ज्ञान,द र्ान चरित्र, तप और वीर्य की जो आराधना की थी वह आज भी धर्मसंघ में कायम है या नहीं इस पर आत्मचिंतन जरूरी है। क्योंकि केवल अतीत केवल पर भविश्य को उज्जवल नहीं बनाया जा सकता। वर्तमान में भी साधना होगी तभी स्वर्णीम अतीत को सुरक्षित रख सकेंगे और भविश्य को सुन्दर बना सकेंगे। उन्होने अपने ि ाश्य समुदाय को वि ोश तौर पर ध्यान देने की प्रेरणा देते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु ने जो ज्ञान की आराधना की जो द र्ान की आराधना की, जो चरित्र की आराधना की क्या वह आज भी वैसी चल रही है। भिक्षु स्वामी ने तप और वीर्य की आराधना की, उसकी जगह वर्तमान में ऐसा तो नहीं हो रहा है कि आलस्य, सुविधावाद और प्रमाद में समय जा रहा है। उन्होने कहा कि संयम की साधना जिस संघ में चलती है वह वर्तमान में प्राणवान रहता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि कबीर की तरह आचार्य भिक्षु की साधना सगुण वाणी की साधना थी। सगुण भाशा बोलने वाला क्रांतिकारी पुरुश होता है। उन्होने कहा कि हम आज के दिन संकल्प लें कि हमारा संयम अनुत्तर रहेगा। चाहे कैसा भी कश्ट आ जाये पर संयम अविचल रहेगा। आज के पावन दिन को मनाने की सार्थकता केवल गुणगान, स्तुति से नहीं होगी बल्कि उनके द र्ान और जीवनपथ पर चलने का संकल्प लेने से होगी। आचार्य कालुगणी ने जो विकास के ज्ञान की आराधना के बीज उनको आचार्य तुलसी ने पल्लवित किया और जिस प्रकार उन्होने अभिनिश्क्रमण के अर्थ को समझा वह संघ को वर्तमान युग में तैजस्वी बनाने वाला सिद्ध हुआ।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि आज रामनवमीं का दिन है। हमारे यहां जैन रामायण पर जितना व्याख्यान किया जाता है औ जो सरसता एवं रोचकता होती है वह महत्त्वपूण है। आज के दिन ही आचार्य भिक्षु ने पूर्व नियोजित ढंग से अभिनिश्क्रमण किया। इसमें भी कुछ रहस्य है जिसको समझने की जरूरत है। उन्होने संघ से अलग होने के कारणों में आचार दौर्बल्य, सम्मान लिप्सा की पूर्ति न होना, अनुकुल व्यवस्था न मिलना और आचार विचार के मुद्दे को बताते हुए कहा कि प्रथम तीन नकारात्मक है। चौथा कारण सकारात्मक है। आचार्य भिक्षु में आचार दौर्बल्य नहीं था, पदलिप्सा भी नहीं थी और गुरू का कृपापात्र ि ाश्य होने से व्यवस्था की प्रतिकूलता भी नहीं थी। उन्होने आचार विचार के आधार पर अभिनिश्क्रमण किया और एक नई क्रांति की।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि अभिनश्क्रमण नहीं कर सकता है जो निर्भयी, साहसी और लक्ष्य के प्रति समर्पित होता है। आचार्य भिक्षु ने महावीर की वाणी के आधार पर सत्य की खोज करने के लिए अभिनिश्क्रण किया। सत्य की खोज वही कर सकता है जो सुख सुविधाओं को त्यागता है। उन्होने 250 वर्श पूर्व आचार्य भिक्षु द्वारा प्रदत्त द र्ान को वर्तमान भी बहुत प्रासंगिक बताया।

**क्रम I: .....2**

कार्यक्रम में मुनि दिने ाकुमार, साध्वी विमलप्रज्ञा, साध्वी अणिमाश्री, साध्वी समताश्री, साध्वी भा ीप्रभा, साध्वी कु ुमप्रभा, साध्वी मैत्रीप्रभा, समणी सत्यप्रज्ञा ने आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व एवं कर्तव्य पर प्रका ा डाला। वरीश्ठ श्रावक कन्हैयालाल छाजेड़ ने आचार्य भिक्षु से जुड़े इस पावन दिन पर सामाजिक स्तर पर नई क्रांति लाने का आचार्यवर से अनुरोध किया। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

**तुलसीराम चौरड़िया**
**मीडिया संयोजक/सहसंयोजक**